मन्दिर में रहो
का परिचय

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

शुक्रवार, २४ अप्रैल, २०२०

श्रीगुरु के वचनों की शक्ति के विषय में भारतीय शास्त्र विस्तारपूर्वक यह बताते हैं कि किस प्रकार श्रीगुरु के शब्दों में कृपा सतत प्रवाहित होती रहती है और श्रीगुरु जो भी कहते हैं वह फलीभूत हो सकता है और अवश्य ही फलीभूत होता है। शिवसूत्र में एक सूत्र है : कथा जपः। "श्रीगुरु जो भी कहते हैं वह मन्त्र है।" मेरा यह महान सद्भाग्य रहा है कि मैंने इस सूत्र के सत्य को बार-बार अपनी आँखों के सामने प्रकट होते देखा है। मार्च २०२० से सिद्धयोग वैश्विक हॉल में हो रहे, "मन्दिर में रहो" सत्संग, इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

इस वर्ष के आरम्भ में, २ जनवरी को श्री मुक्तानन्द आश्रम में हुए एक सत्संग के दौरान, श्रीगुरुमाई ने कहा कि एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के नेतृत्वकर्ता [जिनमें से कई उस दिन उपस्थित थे] यह सुनिश्चित करें कि 'वैश्विक हॉल' में सीधे वीडिओ प्रसारण आयोजित हों—और वे *निरन्तर* आयोजित होते रहें। एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के नेतृत्वकर्ता पूरे हृदय से इन सत्संगों को आयोजित करने के लिए सहमत हुए। उनके सहमत होने से सत्संग में उपस्थित लोगों को एक आश्वासन मिला कि नेतृत्वकर्ता अब अवश्य यह सुनिश्चित करेंगे कि गुरुमाई जी के इस आदेश का पालन हो।

मैं बताती हूँ कि गुरुमाई जी ने ऐसा करने के लिए क्यों कहा था। एक दिन पहले, १ जनवरी को, मधुर सरप्राइज़ के दौरान ऐसा कई बार हुआ जब अनेक प्रतिभागियों के लिए सीधे वीडिओ प्रसारण में रुकावटें आईं। ऐसा नहीं था कि सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर किसी सीधे ऑडिओ या वीडिओ प्रसारण के दौरान यह पहली बार हुआ हो। संघम् में लोग अपनी परेशानी बताते रहे थे और इसका समुचित कारण भी है—वे सिद्धयोग सत्संग का एक क्षण भी खोना नहीं चाहते थे। उन्होंने एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के वेबसाइट विभाग को, बार-बार आ रही इन तकनीकी समस्याओं के बारे में जानकारी दी थी और साथ ही उन्होंने सीधे वीडिओ प्रसारण के डायरेक्टर्स [निर्देशकों] से बात

भी की थी। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए, गुरुमाई जी ने कहा कि नेतृत्वकर्ता यह देखें कि ये मुद्दे सुलझें—यानी वे यह सुनिश्चित करें कि एस. वाय. फ़ाउन्डेशन का आइ. टी. विभाग अपेक्षित टेक्नॉलोजी का उपयोग करने में और अधिक अनुभव प्राप्त करे।

उस समय ऑस्ट्रेलिया में जो कुछ घट रहा था, उसके कारण भी गुरुमाई जी ने कहा था कि सीधे वीडिओ प्रसारण आयोजित किए जाने चाहिए। २०१९ के जुलाई माह से, जंगल की आग उस देश का विनाश कर रही थी और जनवरी तक स्थिति बदतर ही होती चली गई थी। जीवन और ज़मीन की हानि झेलने से और अपने लगातार चल रहे संघर्षों की वजह से लोग शारीरिक और मानसिक रूप से बहुत हतोत्साहित और कमज़ोर हो गए थे। गुरुमाई जी की यह प्रबल कामना थी कि वे लोग सिद्धयोग अभ्यासों के द्वारा नव-जीवन का, नव-चेतना का अनुभव करें। लोगों के लिए उनकी यह कामना थी कि सत्संग द्वारा वे एक तरह से "अपने आपको पुनः ओज से भर लें।"

इसके साथ ही, गुरुमाई जी उन डेढ़ अरब पशु-पक्षियों के प्रति अपना गहरा, गहरा, *गहरा,* दर्द और वेदना व्यक्त करती रही थीं जो आस्ट्रेलिया की आग में मृत्यु को प्राप्त हो गए। इसलिए, एक अन्य कारण जिसके लिए गुरुमाई जी सत्संग आयोजित करना चाहती थीं, वह यह था कि उन आत्माओं को शान्ति प्राप्त हो सके जो इतने आकस्मिक और क्रूर तरीक़े से इस लोक से विदा हो गईं।

समय बीतता रहा परन्तु गुरुमाई जी के आदेश को कार्यान्वित नहीं किया जा रहा था। और फिर, इससे पहले कि हम जान पाते कि क्या हो रहा है, हम COVID-१९ [कोविड -१९] महामारी के रूप में एक सार्वभौमिक संकट से घिर चुके थे। अचानक पूरी दुनिया इस अत्यन्त पेचीदा और रहस्यमय बीमारी के भय से ग्रस्त हो चुकी थी। यह बीमारी कैसे बढ़ती है, कैसे अपना रूप बदलती है, कैसे फैलती है, किस तरह की यह बीमारी है—यह वैज्ञानकों के लिए लगातार एक पहेली बना हुआ है। अचानक ही हमें अज्ञात में धकेल दिया गया, हमें एक ऐसे भविष्य के साथ संघर्ष करने के लिए विवश कर दिया गया जो उस भविष्य से बेहद अलग दिखाई देगा, जिसकी किसी ने योजना बनाई होगी। इसी बात को ध्यान में रखकर, गुरुमाई जी ने कहा, "इन्तज़ार बहुत हो गया। एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन को चाहिए कि वह सीधे वीडिओ प्रसारण करे। चलो हम यह करते हैं। हम इसे शुरू करते हैं।"

इसलिए, शनिवार, २१ मार्च को गुरुमाई जी ने रोहिणी मेनन और मुझसे बात की और उन्होंने हमें बताया कि वे सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् के साथ सत्संग करना चाहती हैं। इस सत्संग के लिए गुरुमाई जी का संकल्प था, कि लोगों का फिर से उत्साहवर्धन हो।

जब गुरुमाई जी ने यह कहा तो हमारी आँखें चमक उठीं। हम भी यही करना चाहते थे। हम भी ऐसा होते हुए देखना चाहते थे। और—हमने ऐसा *कर लिया!* श्रीगुरुमाई की कृपा और आशीर्वादों के साथ हमने इसे पूरा किया।

उसी शाम को भगवान नित्यानन्द मन्दिर से, "मन्दिर में रहो" सत्संग का सबसे पहला सीधा वीडिओ प्रसारण हुआ। उसकी ख़बर तुरन्त फैल गई, केवल दो ही घण्टों के अन्दर, लगभग छप्पन देशों के लोग सत्संग में खिंचे चले आए, वे *मन्दिर में रहने* के लिए तैयार थे।

उस पहले सत्संग में, केवल एक कैमरा था। एक ही कैमरा था—श्रीगुरुमाई की सिखावनियाँ प्राप्त करने के लिए; उनके तेजोमय दर्शन पाने के लिए; बड़े बाबा के स्वरूप की आभा ग्रहण करने के लिए भी और फिर, कृपा और आशीर्वादों की इस अद्‌भुत महाराशि को पूरे संसार में भेजने के लिए, जिससे कि गुरुमाई जी का संकल्प पूर्ण हो सके और लोगों का उत्साहवर्धन हो सके। उस शाम बहुत ही कम लोगों को मन्दिर में उपस्थित रहने के लिए आमन्त्रित किया गया था—केवल उन लोगों को जो सेवा अर्पित कर रहे थे और कुछ प्रतिभागियों को। इसके अलावा, बैठने की व्यवस्था भी काफ़ी कुछ असामान्य-सी थी। हम एक-दूसरे से कम-से-कम छः फ़ीट की दूरी पर बैठे थे; सामाजिक दूरी यानी सोशल डिस्टेन्सिंग के उन मापदण्डों के अनुसार, जो न्यूयार्क राज्य सरकार ने लागू किए हैं।

आपको याद होगा कि गुरुमाई जी ने उस सत्संग के दौरान बैठने की व्यवस्था के बारे में कहा था और यह भी, कि इससे उन्हें अपनी किशोरावस्था व युवावस्था के दौरान गुरुदेव सिद्धपीठ में बिताया हुआ समय याद हो आया था। गुरुमाई जी ने बड़े खुश होकर बताया कि वे और उनकी सहेलियाँ हमेशा यह देखते कि विदेशी लोग कैसे बैठते हैं, विशेष तौर पर वे लोग जो आश्रम में पहली बार आते। वे लोग गुरुचौक में अपने साथ बड़े-बड़े कुशन और तकिये लादकर लाते और उनमें से हरेक तकिया कम-से-कम पाँच फ़ीट लम्बा होता। उन तकियों का उपयोग वे लोग अपने लिए जगह सुरक्षित रखने के लिए करते।

जब वे ठीक से बैठ जाते तो वहाँ खुद के लिए एक "आध्यात्मिक" मण्डल बनाकर बड़ी शान्ति से बैठते—इस तरह का मण्डल जिसे सच में केवल एक पश्चिमी व्यक्ति ही धारण कर सकता है। वे वहाँ बैठते और बड़ी एकाग्रता से, गम्भीरता से बाबा जी के दर्शन *ग्रहण करते;* वे बाबा जी के प्रवचनों को बड़ी गम्भीरता से सुनते; ध्यान ऐसे करते जैसे कि वे चिरकालिक, परम योगी हों, स्वाध्याय ऐसे करते कि जैसे कल आएगा ही नहीं—और इन सभी के दौरान पूरे आत्मविश्वास के साथ भरे होते कि जब तक

वे अपने कुशन और तकिये के घेरे के अन्दर हैं, कोई भी उनके इलाके में घुस नहीं सकता था। और कोई कर भी नहीं पाता था, क्योंकि इतने कड़े परिश्रम से उन्होंने अपने चारों ओर किला जो बनाया होता था।

दुर्भाग्यवश, इसका अर्थ यह भी था कि भारतीय भक्तगण जो गुरुचौक में बैठे होते थे उन्हें बाबा जी को देखने और उनके दर्शन पाने में बहुत कठिनाई होती थी। एक तो भारतीय लोग विदेशियों की तुलना में कद में छोटे होते हैं और ऊपर से ये लम्बे विदेशी खुद को तकियों के ढेर पर बिठा लेते थे! गुरुमाई जी को और उनकी मित्र-मण्डली को यह नज़ारा बहुत ही *मज़ेदार* लगता था। वे हँसतीं, हँसतीं और खूब हँसतीं—तथापि जैसा कि गुरुमाई जी ने कहा कि इस बात को लेकर वे लोग विदेशियों के सामने या बाबा जी के सामने *कभी नहीं* हँसती थीं।

२१ मार्च के सत्संग में, गुरुमाई जी ने कहा, "यह नज़ारा अब वापस आ गया है। खुद के लिए जगह बनाने हेतु और अन्य सभी को उनकी अपनी जगह बनाने देने के लिए हर कोई बाध्य है। यह एक क़ानून बन गया है, जबकि पहले यह व्यक्तिगत पसन्द की बात हुआ करती थी।"

गुरुमाई जी ने बाद में मुझसे कहा कि यह बहुत ज़रूरी है कि दूसरे जो करते हैं उस पर कोई भी, कभी भी हँसे नहीं, क्योंकि कर्म हमेशा वापस आता है। गुरुमाई जी ने कहा, "वह बहुत समय पहले की बात थी। वह हँसी-मज़ाक से भरा एक मासूम पल था, और अब देखो। जो उन पश्चिमी सिद्धयोगियों ने किया, वह अब एक क़ानून बन गया है! तो वास्तव में, वे भविष्यदर्शी थे।" गुरुमाई जी और मैं इस बात पर बहुत हँसे कि—कैसे समय आने पर, हर चीज़ आख़िरकार घूमकर वापस आ ही जाती है।

***

"मन्दिर में रहो" सीधे वीडिओ प्रसारण सत्संग का उद्‌घाटन, कई तरह से एक सफलता थी। बाद में गुरुमाई जी ने रोहिणी से कहा, "तुम्हारे अन्दर सीधे वीडिओ प्रसारण को प्रस्तुत कर पाने की क्षमता है। अपने लिए एक पद निर्धारित करो और उसे एक नाम दो, और यह श्रेष्ठ सेवा करना जारी रखो जिससे लोगों का उत्साहवर्धन होगा।"

अगले ही दिन रोहिणी गुरुमाई जी के पास गईं और बोलीं कि बहुत मन्थन करने के बाद, विचार-विमर्श करने और पक्ष-विपक्ष पर ग़ौर करने के बाद, वे और उनके सहसेवाकर्ताओं ने यह पदनाम चुना है, "मैनजिंग डायरेक्टर" यानी "प्रबन्ध संचालक" या "प्रबन्ध निर्देशक।" रोहिणी गुरुमाई जी को वे सभी

कारण गिनाती गईं कि उन्होंने यह पदनाम क्यों चुना है और इसे क्यों स्वीकृत किया है।

गुरुमाई जी ने कहा, "ठीक है। जिससे भी काम बने—ज़रूरी यह है कि तुम अपना काम करो व जो तुम कर रही हो उससे सिद्धयोग संघम् लाभान्वित हो, और उनका उत्साहवर्धन हो।"

और इस प्रकार, आगे बढ़ने के लिए गुरुमाई जी से आशीर्वाद प्राप्त कर रोहिणी—जो अभी-अभी नई मैनेजिंग डायरेक्टर बनी थीं—उन्होंने एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के स्टाफ़ के सदस्यों के एक बहुत छोटे-से समूह को एकत्र किया ताकि ये सत्संग सम्पन्न हो सकें। तब से, सिद्धयोग वैश्विक हॉल में और भी कई "मन्दिर में रहो" सत्संग आयोजित हुए हैं और हो रहे हैं। मैंने पहले भी इस विषय में कहा है कि श्रीगुरु के वचन फलीभूत होते हैं—कैसे भी, किसी भी तरीक़े से फलीभूत होते हैं और हमेशा उस रूप में नहीं, जैसी आप अपेक्षा करते हों, पर श्रीगुरु जो कहते हैं वह *अवश्य* प्रकट होता है। मुझे हिन्दी की एक कहावत भी याद आई, जिसके बारे में गुरुमाई जी ने मुझे बताया था कि यह उनकी एक पसन्दीदा कहावत है : "जहाँ चाह, वहाँ राह।" "यदि आपमें उत्कट इच्छा है, कामना है, ललक है तो आपको उसे पूरा करने का रास्ता मिल जाएगा।" या जैसे अंग्रेज़ी की कहावत है : "Where there's a will, there's a way."

मुझे याद है कि जब मैंने पहली बार इन सत्संगों के लिए गुरुमाई जी द्वारा दिए गए शीर्षक, "मन्दिर में रहो" [अंग्रेज़ी में "Be in the Temple"] को सुना तो मैं इससे बहुत खुश हो गई थी, साथ ही बहुत प्रेरित भी हुई थी। इस शीर्षक में कुछ तो था, इन शब्दों में *कुछ ऐसा था* जो मेरे साथ बना रहा, जिसने मुझे गहराई तक प्रभावित किया। मैंने यह अमी बन्सल को बताया जिनके साथ मैं सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर लेख लिखने की सेवा अर्पित करती हूँ। मैंने कहा, "अमी, मैं नहीं जानती कि वास्तव में क्यों, पर यह शीर्षक —यह *बिल्कुल सही* लगता है। क्या आप 'मन्दिर' शब्द के विषय में और भी कुछ जानती हैं? इसका कोई और भी गहरा अर्थ है क्या?"

अमी भारत में रहती हैं और वे संस्कृत भाषा की विद्वान हैं। तो जैसे ही मैंने उनसे इन शब्दों और उनकी व्युत्पत्ति के बारे में प्रश्न पूछा, मैं फ़ोन पर भी सुन पा रही थी कि वे कितनी खुश हैं। वे हँसीं और उन्होंने कहा, "हाँ बिल्कुल।" वे आगे समझाने लगीं—एक ऐसे शिक्षक की उस आतुरता के साथ, जिसे आख़िरकार लम्बे समय बाद, एक विद्यार्थी मिल गया हो जिसमें ज्ञान की पिपासा हो।

अमी ने कहा कि अंग्रेज़ी शब्द *temple* के लिए हिन्दी भाषा में शब्द है, 'मन्दिर' और यह संस्कृत शब्द

'मन्दिरम्' से आता है। 'मन्दिरम्' का मुख्य अर्थ है, "निवास-स्थान," "धाम," "रहने की जगह," या "घर।" 'मन्दिरम्' शब्द में 'मन्' शब्द भी निहित है, जिसका अर्थ है "हृदय," "बोध," व "चेतना।" अमी ने कहा कि इसीलिए, हम 'मन्दिरम्' को इस तरह समझ सकते हैं कि 'मन्दिरम्' शब्द दिव्य परम चेतना या चिति के घर को या निवास-स्थान को दर्शाता है।

निवास-स्थान या घर की अवधारणा और "मन्दिर में रहो," "Be in the Temple" इस शीर्षक के बीच एक और मज़ेदार सम्बन्ध है। एक सिद्धयोगी ने मुझे बताया कि किसी ने सोशल मीडिया पर इसका एक संक्षिप्त रूप डाला है, जिसे उन्होंने अंग्रेज़ी के शीर्षक के कुछ अक्षरों को मिलाकर बनाया है। वह संक्षिप्त रूप है, "BEIT," [अंग्रेज़ी शीर्षक "Be in the Temple," के पहले अक्षरों को मिलाकर यह नया शब्द बनता है।] और इस व्यक्ति और उसके मित्रों ने बताया कि अरबी भाषा में इस शब्द "BEIT" का अर्थ, वास्तव में "घर" होता है। इसका प्रयोग एक पावन-पुनीत स्थान को दर्शाने हेतु भी किया जाता है।

हाल ही में, मैं गुरुमाई जी के साथ एक मीटिंग में थी और उन्होंने बताया कि क्यों उन्होंने इन सत्संगों को, "मन्दिर में रहो" का शीर्षक दिया है। गुरुमाई जी ने कहा कि यह नाम मन्दिर के विषय में लोगों को बेहतर समझ देगा। लगभग सभी भाषाओं में मन्दिर शब्द के लिए कोई न कोई समान अर्थ वाला शब्द है। यह एक ऐसी अवधारणा है जो क़रीब-क़रीब सभी संस्कृतियों, धर्मों और आध्यात्मिक परम्पराओं में पाई जाती है। मन्दिर क्या है, इस विषय में हरेक का अपना मत होता है, मन्दिर जाने के सभी के अपने कारण होते हैं, मन्दिर में क्या होता है, इस विषय में सभी की अपनी राय होती है। मन्दिरों का अस्तित्व प्राचीन समय से आज तक रहा है, पुरातत्त्ववेत्ता इन आराधना-स्थलों के खण्डहरों को खोजकर पता लगा रहे हैं, जिनका निर्माण पता नहीं किसने, कितने वर्षों पहले करवाया था। और पूरे संसार में, नए मन्दिरों का निर्माण लगातार होता रहता है।

गुरुमाई जी की एक सिखावनी यह है कि शरीर भगवान का मन्दिर है। इसका अर्थ यह है कि, भगवान का निवास-स्थान मात्र एक भौतिक भवन या संरचना ही नहीं है; यह हमारी अपनी ही सत्ता में निहित एक स्थान भी है। अतः, जब हम भगवान नित्यानन्द के मन्दिर में इन सत्संगों में भाग लेते हैं, उस समय हम अपने ख़ुद के हृदय-मन्दिर में प्रवेश कर रहे होते हैं। जिस प्रकार हमें किसी 'मन्दिर' की दीवारों के अन्दर विश्राम मिलता है, सच्चा विश्राम, ठीक उसी प्रकार, सिद्धयोग साधना द्वारा हम अपने ही अन्तर में विश्रान्ति पाने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित होते हैं। जिस प्रकार हम बड़े बाबा के मन्दिर-भवन को

आन्तरिक समाधान से जोड़कर देखते हैं—मन की शान्ति पाने से जोड़ते हैं, अपनी ही शक्ति की पुनः प्राप्ति से जोड़ते हैं—उसी प्रकार जब हम अपने शरीर को मन्दिर के रूप में देखते हैं और मन्दिर की ही भाँति उसका सम्मान करते हैं तो हम जहाँ कहीं भी हों, ठीक वैसे ही अनुभवों को पाने के हमारे अवसर भी बढ़ जाते हैं।

मन्दिर के विषय में, गुरुमाई जी द्वारा यह वर्णन सुनने और अमी से भी उसकी व्याख्या सुनने के बाद और अंग्रेज़ी के शीर्षक के पहले अक्षरों से मिलकर बने शब्द *beit* के साथ भी अचानक एक सम्बन्ध पता चलने पर, मुझे "मन्दिर में रहो" शीर्षक का महत्त्व और भी अच्छी तरह समझ में आया। संसार की वर्तमान परिस्थितियों के कारण यदि कोई एक चीज़ है जो बड़ी स्पष्टता से सामने आई है तो वह यह है कि हम यह भरोसा नहीं कर सकते कि हमारी बाहरी परिस्थितियाँ स्थायी हों ही। और इस मामले में, न ही हम हमेशा अपने शरीर, अपने मन या अपने मनोभावों की स्थिरता पर भरोसा कर सकते हैं। हमारे शरीर में अनिश्चित उतार-चढ़ाव आते रहते हैं; हमारे विचार डाँवाडोल होते रहते हैं। हमारे मूड [मनःस्थिति] के कई रंग होते हैं—वह नीले से लाल पर और फिर लाल से पीले पर खिसकता रहता है और यदि हम सावधान नहीं हैं तो अकसर यह एक तरंग या सनक से भी कुछ बढ़कर होता है। यदि हमारी वास्तविकता इतनी अधिक परिवर्तनशील है तो हमें कुछ ऐसा ढूँढ़ने की ज़रूरत है जिस पर हम अपना विश्वास रख सकें, जो हमारी अपनी कल्पनाओं की मनगढ़न्त धारणाओं से परे हो—कुछ ऐसा जो मन की बेचैनी से भरी समझ से हटकर हो, जो किसी ऐसी स्थिति को समझने व उसका अर्थ ढूँढ़ने का प्रयास कर रहा हो जो उसके नियन्त्रण और उसके समझने की शक्ति से बाहर है।

इसी कारण हम मन्दिर की ओर खिंचे चले आते हैं। मन्दिर स्थिर है, अविचल है। मन्दिर पावन है। मन्दिर एक शरणस्थल है और यह दिव्यता की उपस्थिति से जगमगाता है। मन्दिर परम सत्य को धारण करता है। मन्दिर में निःस्तब्धता छाई रहती है। मन्दिर और इसका वातावरण हमें भगवान के ज्ञान में निमग्न होने का अवसर देता है।

मन्दिर में हम शाश्वतता की, समय के परे होने की अनुभूति करते हैं। मन्दिर में हम अपने भौतिक उपकरण यानी अपने शरीर को ढँकने वाली त्वचा की सात परतों के भी परे यात्रा करते हैं। मन्दिर मूर्तरूप है, उस सभी का जो अच्छा है, उस सभी का जो महान है, उस सभी का जो प्राप्त किया जा सकता है।

इस कारण, हम बारम्बार मन्दिर की ओर लौटते हैं।

***

जैसा कि मैंने पहले बताया है, सिद्धयोग पथ की वेबसाइट द्वारा "मन्दिर में रहो" सत्संग, सिद्धयोग वैश्विक हॉल में निरन्तर आयोजित हो रहे हैं और, जैसा कि आपमें से कई लोग अब जान गए हैं कि इन सत्संगों की जानकारी मुख्यतः मौखिक रूप से बताकर ही दी जा रही है [और ऐसा सभी प्रकार के डिजिटल प्लैटफ़ॉर्म की सहायता से भी किया जा रहा है]। जब रोहिणी और उनके सहसेवाकर्ताओं ने देखा कि २१ मार्च के "मन्दिर में रहो" के प्रथम सत्संग के लिए इस तरह जानकारी पहुँचाना कितना कारगर था तो उन्होंने निर्णय लिया कि इस प्रकार एक-दूसरे को मौखिक रूप से सूचना देना ही सबसे अच्छा रहेगा, बजाए इसके कि एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन हरेक को सार्वभौमिक ई-मेल द्वारा यह जानकारी दे।

मैं अनुभव करती हूँ कि इस प्रकार बताने में एक प्रकार का नयापन और उत्सुकता होती है, और साथ ही यह ख़ूबसूरत-सी भावना जानी-पहचानी भी लगती है। यह ऐसा ही है जैसे आपका एक मित्र आपको एक राज़ की बात बता रहा हो, या आपको एक ऐसा उपहार दे रहा हो, जिसकी आपको उम्मीद भी नहीं थी और आप सोचते हैं, "अरे वाह! मेरे लिए? आश्चर्य है मैंने ऐसा क्या किया कि मुझे यह मिल रहा है, मैंने कौन-से पुण्य किए हैं।"

मौखिक रूप से एक-दूसरे को सूचना देने के विषय में एक बात जो मुझे भी वास्तव में बहुत अच्छी लगती है, वह यह कि इससे सभी सिद्धयोगियों को सेवा अर्पित करने का एक अवसर मिलता है। यह हरेक व्यक्ति को प्रेरित करता है कि वह अपनी सीमित दुनिया से बाहर आकर दूसरों के बारे में सोचे— "और किसे इसके बारे में पता होना चाहिए? मैं और किसे सत्संग में आमन्त्रित कर सकता हूँ?" मुझे यह देखकर बहुत ख़ुशी हुई है कि किस प्रकार पिछले कुछ सप्ताहों में यह सामूहिक योगदान "मन्दिर में रहो" सत्संगों की विशेषता बन गया है। हर जगह लोग श्रीगुरुमाई के प्रसाद को इस तरह वितरित करने की ज़िम्मेदारी ले रहे हैं। यह बात मुझे यह दर्शाती है कि सिद्धयोगी विश्व में कहीं भी रहें, वे वहीं से सेवा अर्पित कर सकते हैं। आप इसे यह भी कह सकते हैं—*सीमाओं से रहित सेवा*।

श्रीगुरुमाई की इच्छा है कि इन सत्संगों से हर किसी को कुछ न कुछ ऐसा मिले जिसे वे थामे रख सकें और वे "मन्दिर में रहो" सत्संगों की सिखावनियों का अध्ययन व अभ्यास कर सकें, उन्हें आत्मसात् कर

सकें व उनका परिपालन कर सकें। इसलिए सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के इन पृष्ठों पर आपको सीधे वीडिओ प्रसारण द्वारा आयोजित "मन्दिर में रहो" सत्संगों से श्रीगुरुमाई की सिखावनियाँ व प्रवचन मिलेंगे। शीघ्र-ही इन सत्संगों के अन्य तत्त्व भी पोस्ट किए जाएँगे— सिद्धयोगियों व सिद्धयोग स्वामियों की वार्ताएँ, इन सत्सगों के सहायकों व कलाकारों के अनुभव, भगवान नित्यानन्द मन्दिर की छवियाँ और वीडिओ तथा और भी बहुत कुछ।

मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि आप इन सिखावनियों को पढ़ें और पुनः पढ़ें और उन पर मनन-चिन्तन करने के लिए कोई समय नियत कर लें। आपमें से जिन लोगों ने सीधे वीडिओ प्रसारणों में भाग लिया है, उनके पास इन सत्संगों के अपने अनुभवों का पुनः रसास्वादन करने का व अपनी समझ को और गहरा करने का अवसर होगा; जिन्होंने भाग नहीं लिया है उन्हें इन सत्संगों की एक झलक मिलेगी। दोनों ही स्थितियों में, मैं आपसे आग्रह करती हूँ कि आप इन सिखावनियों का लाभ उठाएँ—ख़ासकर इस समय, जब हम स्वयं को एक दोराहे पर खड़ा हुआ पा रहे हैं, जहाँ हमें यह पूरी तरह पता ही नहीं है कि आगे कैसे बढ़ें या फिर हम कहाँ जा रहे हैं।

हाल ही में श्रीगुरुमाई ने मुझे एक प्रसिद्ध पर्यावरणविद् व लेखक जॉन म्योर का एक उद्धरण कथन सुनाया। म्योर कहते हैं, "जब हम किसी एक भाग को अलग करने का प्रयास करते हैं तो हम पाते हैं कि वह भाग ब्रह्माण्ड की हर वस्तु के साथ जुड़ा हुआ है।" इस समय, हमें वास्तव में बड़ी स्पष्टता से यह मालूम है कि हर व्यक्ति और हर चीज़ आपस में कितनी अधिक जुड़ी हुई है। हम यह देख रहे हैं कि एक व्यक्ति को जो होता है वह दूसरे व्यक्ति को किस तरह प्रभावित करता है, कैसे कश्मीर के किसी व्यक्ति का दर्द मणिपुर में महसूस हो सकता है, कैसे ब्यूनस आयर्स के किसी व्यक्ति की पीड़ा क्योटो में महसूस की जा सकती है। लोगों ने इस प्रकार की घटना को अनेक नाम दिए हैं—"द बटरफ्लाई इफैक्ट," "द हन्ड्रेड्थ मंकी इफैक्ट," या फिर सुपरिचित *तरंग-प्रभाव* [रिपल इफैक्ट]।

"मन्दिर में रहो" सत्संगों में श्रीगुरुमाई द्वारा प्रदान की गई सिखावनियों को पढ़कर—और उन पर मनन-चिन्तन कर व उन्हें अपने जीवन में लागू करना आरम्भ करके—मैं यह कह सकती हूँ कि जिस तरह हमारा दर्द और कष्ट कई गुना बढ़ सकते हैं, उसी तरह हमारे सत्कर्म भी कई गुना बढ़ सकते हैं। यदि हम भय के स्थान पर या उसके रहते हुए भी, अपने अन्तर में धैर्य और अच्छाई का आवाहन करें तो हम अपने ही एक तरंग-प्रभाव का निर्माण कर सकते हैं। हमारी किस्मत बहुत अच्छी है कि हमारे जीवन में श्रीगुरु की कृपा है। हमारी किस्मत बहुत अच्छी है कि हमें अपने श्रीगुरु से सिखावनियाँ मिली हैं और

हमारे पास यह अवसर है कि हम उन्हें अपने जीवन में लागू कर सकते हैं और उन्हें लागू करने के तरीक़े को परिष्कृत करते रह सकते हैं। ऐसा करते रहने से, इसके परिणाम स्वरूप मिलने वाले साधना के फलों का उपयोग हम कर सकते हैं जिससे हम दूसरे लोगों की बेहतर तरीक़े से सहायता कर सकते हैं, हमने जो सीखा है और जो अनुभव किया है, उसे पूरी तरह अपने अन्दर उतारकर, फिर हम उसे मानवता की सेवा के लिए और इस पृथ्वी के संचालन व प्रबन्धन के लिए उसे अर्पित कर सकते हैं।

©२०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।